Paytm
MM
Majdoor Morcha
UPI ID: 8851091460@paytm
8851091460
Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

एमसीडी चुनाव : 'आप' के हाथों बिके दो कांग्रेसी पार्षद, पिटाई के डर से लौटे वापिस

दिल्ली, (सत्यवीर सिंह)

ये युग नैतिकता की दरिद्रता के लिए जाना जाएगा. सांसद और विधायक ही नहीं, पार्षद भी ढोरों की तरह बिक रहे हैं. समूचा देश एक राजनीतिक मंडी बना हुआ है. आम आदमी पार्टी, जो हर रोज़ दुखड़ा रोती रहती है, जो कि बिलकुल सही है, कि बोरा भर नोटों के बदले भाजपा उनके विधायकों को ख़रीद रही है; ख़ुद, दिल्ली नगर निगम में, चुने गए कांग्रेसी पार्षदों पर हाथ साफ करने वाली थी. मुस्तफ़ाबाद और बृजपुरी के जागरुक मतदाताओं ने उनका खेल ख़राब कर दिया. वित्तीय इजारेदारी, दरअसल, राजनीतिक इजारेदारी कायम कर चुकी है. सारा बुर्जुआ राजनीतिक पदार्थ, सत्ताधारी राजनीतिक गटर गंगा में समाता जा रहा है. कोई भी विपक्ष, मतलब लोकपक्ष की भूमिका निभाने को तैयार नहीं. ऐसे सड़ांध भरे माहौल में, चुने प्रतिनिधियों की तिज़ारती मंडी के बीच, मुस्तफाबाद और बृज पुरी के नागरिकों ने, अद्भुत एकजुटता और साहस दिखाते हुए एक मिसाल क़ायम की है. जनवादी स्पेस और संवैधानिक मूल्यों को बचाने की लड़ाई भी, अपनी एकजुटता क़ायम रख, लोग ही जीत सकते हैं. किसी भी बुर्जुआ दल से कोई उम्मीद नहीं बची. इसी तरीके से इन 'जन-प्रतिनिधियों' को लोग, संसद, विधान सभा और नगर निगमों में जन सरोकार के मुद्दे उठाने को बाध्य कर सकते हैं. मुमकिन है, जल्दी ही हम वह दृश्य देखें जब, वादे कर गद्दारी करने वाले 'माननीयों' को, गुस्से में तिलमिलाए लोग सड़कों पर दौडाएंगे.

उत्तर-पूर्व दिल्ली के मुस्तफाबाद (वार्ड न 243) और बृजपुरी (वार्ड न 245), दिल्ली नगर निगम चुनावों में, महिलाओं के लिए आरक्षित वार्ड थे. मुस्तफाबाद निवासी अली मेंहदी दिल्ली कांग्रेस के उपाध्यक्ष हैं. उनकी पत्नी सबीला बेग़म, मुस्तफाबाद से और नाज़िया ख़ातून, बृजपुरी सीट से कांग्रेस की उम्मीदवार थीं.

नागरिकता विरोधी काले कानूनों के विरोध के शानदार आन्दोलन और उसके बाद

माला पहने पार्षदपतियों की जनता ने कसी नकेल

राज्य प्रायोजित मुस्लिम-विरोधी हिंसा, जिसे 'दिल्ली दंगे' कहा जाता है; में भाजपा तो प्रमुख गुनहगार है ही, केजरीवाल की 'आप' ने भी बहुत बेशर्मी की थी. वह भी कम गुनहगार नहीं. भाजपा ने तो उस आन्दोलन को तोड़ने के हर संभव प्रयास किए ही, नेतृत्वकारी साहसी महिलाओं को, 500 रु में धरने पर बैठने वाली किराए की औरतें तक कहा. केजरीवाल और उनकी भजन मंडली ने भी, ना सिर्फ़ उनका विरोध किया बल्कि निज़ामुद्दीन में हुई 'ज़मात' के मामले में, 'आप' के चेहरे पर पड़ा, शालीनता और ईमानदारी का मुखौटा उतर गया और उसका असली हिन्दू तालिबानी चेहरा नंगा हो गया.

मुस्तफाबाद और बृजपुरी के लोगों ने, ना सिर्फ़ भाजपा और आप को, बल्कि मुस्लिम समाज में व्याप्त भय को भुनाकर अपनी राजनीतिक दुकान चमकाने की कवायद में लगे, ओवैसुद्दीन ओवैसी की पार्टी को भी सबक़ सिखाने की ठान ली. वोट ही नहीं, लोगों ने चंदा भी जमा किया और कांग्रेस के पार्षदों, सबीना बेग़म और नाज़िया ख़ातून को चुनाव जिता दिया. बे-इन्तेहा लोभ और गटर-स्नान की जो फ़िज़ा देश में है, उसके चलते दोनों कांग्रेसी पार्षद, 'अपने क्षेत्र का तेज़ी से विकास करने के लिए', 'आप' में शामिल हो गए. ख़बर सुनते ही, लोग उबल पड़े; "ये तो गद्दारी कर दी इन लोगों ने"!! अपना काम-धंधा छोड़, गुस्साए लोग, पार्षदों और उनके पतियों (अली मेंहदी और जावेद चौधरी) की तलाश में निकल पड़े. 'माननीय' समझ गए कि उन्हें दौड़ाया जाने वाला है!!

आधी रात के बाद छुपकर, जैसे-तैसे अपने घर पहुंचे और घर में दुबककर, 'गलती हो गई' विडियो बनाकर प्रेषित कर दिया. सोचा लोग बहक जाएँगे. सुबह उठकर, बाहर झाँका तो देखा, गुस्से में तमतमाए, सैकड़ों लोग, हाथों में लट्ठ लिए, उनके बाहर निकलने का इंतज़ार कर रहे हैं. बाहर क़दम रखते ही अच्छी ख़ातिर होने वाली है, वे समझ गए. अन्दर बैठे-बैठे केजरीवाल को बोल दिया कि वे उनके भरोसे ना रहे, उनकी अंतरात्मा जाग गई है. वे अपने लोगों की भावनाओं को देखते हुए वहीं वापस जा रहे हैं, जहाँ थे. सबीला बेग़म के दफ़्तर में काम कर रहे जावेद ने मीडिया को बताया, 'अगर 'गलती' सुधारने में मेडम ने देर की होती तो मामला बिगड़ जाता, गुस्साए लोग हमें बुरी तरह पीटते. अच्छा हुआ मामला निबट गया.'

फ़ासीवादी घटाटोप के दौर में, उपलब्ध जनवादी जगह और संवैधानिक अधिकारों को बचाए रखना भी, शोषित-पीड़ित समाज के साहसपूर्ण संघर्ष के बग़ैर मुमकिन नहीं होता. चुने प्रतिनिधियों की नाक में नकेल डालने और उन्हें वादे पूरे करने के लिए मजबूर करने का काम भी लोग ही कर सकते हैं. ऐसा होता, पहली बार ही देखा है.

मुस्तफाबाद और बृजपुरी के निवासियों के सहस और एहसास-ए-ज़िम्मेदारी को सलाम।

डेढ़ वर्ष पूर्व की रपट

बड़खल झील का स्थाई सत्यानाश करने हेतु 83 करोड़ का बजट

फ़रीदाबाद (म.मो.) बड़खल विधानसभा क्षेत्र से पहली बार चुनाव लड़ते वक्त 2014 में सीमा त्रिखा ने बड़े ज़ोर-शोर से घोषणा की थी कि चुनाव जीतने के बाद यदि उनकी सरकार बनी तो वे बड़खल झील को जीवित करने के लिये इसे लबालब पानी से भरवा देंगी। वे दो बार चुनाव भी जीत गयी, उनकी सरकार भी बन गयी, परन्तु बड़खल आज भी अपनी बेनूरी पर रो रही है। झील समतल मैदान बन चुका है बड़खल गांव के बच्चे उसमें क्रिकेट खेलते हैं तथा आस-पास कंटीली कीकरों का जंगल बनता जा रहा है।

दरअसल जिस गिरोह के हाथ में सत्ता है, उसकी पहली प्राथमिकता जनहित न होकर सदैव जनता के धन को डकारने की रहती है। इसलिये वे लोग ऐसी जबरदस्त योजनायें बनाकर पेश करते हैं जिस पर मोटा खर्च दिखाया जा सके, जाहिर है जब खर्च का बजट मोटा होगा तभी तो उसमें सेंधमारी मोटी हो सकेगी। दूसरी ओर कुछ जनहितैषी एवं पर्यावरण प्रेमी होते हैं जो सस्ते एवं सुलभ उपायों द्वारा प्राकृतिक चीज़ों को प्रकृति के निकट रख कर विकसित करने में विश्वास रखते हैं। ऐसे ही एक पर्यावरण प्रेमी संगठन 'ग्रीन इन्डिया फ़ाऊंडेशन ट्रस्ट' के करीब 40 विशेषज्ञों ने पहली जून 2019 को बड़खल झील का दौरा किया। इस टीम में अलीगढ़ के सुबोध नंदन शर्मा, विख्यात पक्षी प्रेमी एआर रहमानी सहित कई अन्य जल, जंगल एवं प्रकृति प्रेमी विशेषज्ञ थे। इस संगठन के संगरक्षक मेग सॉय-सॉय पुरस्कार से सम्मानित जल पुरूष राजेन्द्र सिंह हैं।

इन सभी वरिष्ठ विशेषज्ञों ने 10-12 घंटे पूरे क्षेत्र में घूम-फ़िर कर यहां की प्रकृति, वनस्पति, पक्षियों आदि का जायजा लिया। इनहोंने पाया कि इस झील को बहुत आसानी से पुनः बरसाती पानी से ठीक वैसे ही भरा जा सकता है जैसे कि यह पहले भरी जाती रही है। इसके लिये पहाड़ से आने वाले बरसाती पानी के रास्ते में जो भी रुकावटें आ गयी हैं उन्हें दूर किया जाये जिससे बरसाती पानी बह कर झील तक आ सके। उनकी इस परियोजना पर सरकार का एक पैसा भी खर्च होने वाला नहीं था। इस संगठन के मुताबिक बड़खल झील की खुदाई से जो मिट्टी निकलेगी उसकी बिक्री से ही सारा खर्च निकल जायेगा।

यह सारा प्रपोज़ल न केवल लिख कर मुख्यमंत्री सहित उच्चाधिकारियों को दिया गया, बल्कि उक्त टीम ने अपने दौरे के समय विधायक सीमा त्रिखा को मौके पर भी बुलाया था। इतना ही नहीं 9 सितम्बर 2019 को इसी संगठन ने बड़खल झील पर एक कार्यक्रम आयोजित करके 1500 स्कूली बच्चों को प्रकृति, वनस्पति, पर्यावरण एवं झील के बारे में समझाया था ताकि बच्चे भी इसके महत्व को समझ सकें।

इस अवसर पर जलपुरुष राजेन्द्र सिंह व चंडीगढ की सुखना झील के निर्माता अशोक प्रधान (पूर्व आईएएस) ने भी इस जागरूकता अभियान में हिस्सा लिया था।

परन्तु मुफ़्त के कामों में तो शासक गिरोह की कोई रुचि होती नहीं क्योंकि इससे तो उन्हें कुछ मिलने वाला होता नहीं, लिहाज़ा पर्यावरण विशेषज्ञों की योजना की ओर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। इसकी बजाय 83 करोड़ का बजट बना कर सीवर के सड़े हुए पानी से इस झील को भरा जायेगा। इसके लिये कई किलो मीटर लम्बी पाइप लाइनें बिछाई जा रही हैं। तीस एमएलडी का एक एसटीपी यानी सीवेज शोधन प्लांट सेक्टर 21 ए में रेलवे लाइन के निकट लगाया जा रहा है। ख्याली पुलाव पका कर 83 करोड़ का बजट ठिकाने लगाने वाले स्मार्ट लोगों का दावा है कि एसटीपी द्वारा शोधित जल बिल्कुल साफ़ एवं दुर्गंध रहित होगा। पूछने पर ये लोग कहते हैं कि उस पानी से कुल्ला करना तो क्या उसमें हाथ डालना भी संभव नहीं होगा। इतना ही नहीं इस गंदे पानी को धरती के भीतर समाने से रोकने के लिये प्लास्टर ऑफ़ पेरिस की एक परत भी जमाई जायेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस झील से कभी भूजल स्तर चार्ज होता था अब नहीं होगा।

सुधी पाठक इस बात को भली भांति समझ लें कि दिल्ली के तमाम नालों का जो सीवेज यमुना में गिरता है वह भी एसटीपी द्वारा संशोधित ही होता है उसके बावजूद स्वयं यमुना और इससे निकलने वाली आगरा व गुड़गांव नहर का सड़ा हुआ पानी देखा जा सकता है। दूसरा बढिया उदाहरण तिगांव रोड पर जेल के निकट बने सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का है। इसके दो किलोमीटर दायरे में दुर्गंध के मारे सांस लेना भी दूभर है। यदि समय रहते फ़रीदाबाद निवासी, खास कर बड़खल झील के आस-पास वाले, नहीं जागे और इस झील को सीवेज से भर दिया गया तो उनका वहां रहना तक दूभर हो जायेगा।